भारत सरकार

संस्कृति मंत्रालय

राज्य सभा

अतारांकित प्रश्न संख्याः 1312

उत्तर देने की तारीख: गुरूवार, 30 जुलाई, 2026

8 श्रावण,1948 (शक)

जलमग्न सांस्कृतिक धरोहरें

1312 **श्री गोविंदभाई लालजीभाई ढोलकियाः**

क्या **संस्कृति** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या यह सच है कि द्वार का कीतर्ज पर देश के तटवर्ती क्षेत्रों में अनेक जलमग्न सांस्कृतिक धरोहरें विद्य मान हैं;

(ख) ऐसी समुद्री सांस्कृतिक धरोहरों का ब्यौरा क्या है जहां वर्तमान में अनुसंधान और अन्वेषण कार्य चल रहा है;

(ग) ऐसे अनुसंधान और अन्वेषण कार्य हेतु सर कार नेकितना बजट आवंटित किया है; और

(घ) आगामी तीन वर्षों के दौरान इस क्षेत्र हेतु सरकार की क्या योजना है?

उत्तर

संस्कृति और पर्यटन मंत्री

(श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क) और (ख): जी,हां। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण काअंतर्जलीय पुरातत्व स्कंध वर्तमान में द्वारका और बेट द्वारका (गुजरात), महाबलिपुरम (तमिलनाडु) और कराईकल (पुडुचेरी) में अनुसंधान और अन्वेषण कार्य कररहा है।

इसके अलावा, भारत सरकार ने तमिलनाडु राज्य के पुरातत्व विभाग कोपूम्पुहार (तमिलनाडु) में और राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान के समुद्री पुरातत्व केंद्र को बेटद्वारका और छारी तथा गंगाटाबेट (गुजरात) में अंतर्जलीयउत्खनन/अन्वेषण के लिए लाइसेंस प्रदान किया है।

(ग): भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अंतर्जलीय पुरातत्व स्कंधको आवंटित बजट का ब्यौरा निम्नानुसार हैः

वर्ष	**अब तक का आवंटन (रुपये में)**	**अब तक का व्यय (रुपये में)**
2025-26	75,40,000/-	74,91,064/-
2026-27	66,50,000/-	25,63,894/-

इसके अलावा, तमिलनाडु राज्य पुरातत्व विभाग ने भूमि के साथ-साथ अंतर्जलीय पुरातात्विक उत्खनन के लिए 7 करोड़ रूपए निर्धारित किए हैं।

राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान के लिए 20 लाख रूपए का बजटआवंटित किया गया है।

(घ): भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण केअंतर्जलीय पुरातत्व स्कंधने पुरातत्वविदों को प्रशिक्षित करने और जलमग्न स्थलों का सर्वेक्षण करने के लिए एक विशेष कार्यक्रम शुरू किया है।

वर्ष 2030 तक अंतर्जलीय अन्वेषण/उत्खनन के लिए निम्नलिखित स्थलों की पहचान की गई हैः

द्वारका और बेट द्वारका (गुजरात)

विजय दुर्ग (महाराष्ट्र)

जंजीरा (महाराष्ट्र)

कराईकल (पुडुचेरी)

महाबलिपुरम (तमिलनाडु)

*****